IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Comparative Study of the Relationship Between Self-Consciousness And Personality Traits Of Pre-Secondary Level Students

पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों के पारस्परिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन

Mrs. LAKSHMI KOTRE

Research Scholar, PhD (Education)

Department of Education,

Bharti Vishwavidyalaya,Durg,Chhattisgarh, India

सारांश :– प्रस्तुत शोध का उद्देश्य पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों के पारस्परिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में न्यादर्ष हेतु कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं को लिया गया है। कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 100 छात्र तथा 100 छात्राएं है। का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन में स्वचेतना मापनी हेतु डॉ. आशा शुक्ला एवं किशोर व्यक्तित्व परीक्षण हेतु डॉ. ए. पाण्डेय द्वारा मिर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों का स्वचेतना का उनके व्यक्तित्य गुणों से गहरा संबंध है। विद्यार्थियों का स्वचेतना स्तर अधिक होने पर व्यक्तित्व गुण भी अच्छे होंगे।

मूलशब्द :–पूर्व माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, स्वचेतना, व्यक्तित्व गुण, छात्र, छात्राएं।

1. प्रस्तावना :– "प्रत्येक बालक में अनंत ज्ञान अन्तर्निहित है। यह अनंत ज्ञान की निधि है। शिक्षा द्वारा बाहर से ज्ञान आरोपित नहीं किया जा सकता है, शिक्षक बालक में निहित ज्ञान का केवल अनावरण करता है।" **स्वामी विवेकानंद**

"Education in its wider sence includes all the influences which act upon the individual during his passage from the cradle to grave" **Prof. Dumville**

मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही षिक्षा है। षिक्षा का क्रिया निरन्तर चलती रहती है। अपनी अवस्था में अनुसार गुणों का विकास होता है। जिस प्रकार बीज से पौधे और पौधे से वृक्ष बनता है। ठीक उसी प्रकार विद्यार्थियों में भी इसी प्रकार विभिन अवस्थाओं से गुजरने के बाद एक पूर्ण मनुष्य बनता है। समस्त ज्ञान मनुष्य के अंदर में अवस्थित है, उसे केवल जागृत करना, केवल प्रबोधन की आवश्यकता है, बस इतना ही कार्य शिक्षक का है, हमें केवल इतना ही करना है कि विद्यार्थी अपने ज्ञानेंद्रियों के उचित प्रयोग एवं स्वचेतना द्वारा अपनी बुद्धि का प्रयोग करना सीखे, जिससे वे उत्तम व्यक्तित्व गुणों का विकास कर सके। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कक्षा अंतः क्रिया पर विशेष जोर दिया जाता हैं। जिससे शिक्षक लगातार छात्र–छात्राओं का मूल्यांकन करता रहता है। जिससे अध्ययन का प्रभाव बढ़ता है। शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थी की स्वचेतना को परिष्कृत करे उसे ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करे, जिससे विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व गुणों का विकास कर सके। बालक की स्वचेतना एवं व्यक्तित्व गुणों को ध्यान में रखकर ही बालक को शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़े और उसका सर्वांगीण विकास हो।

2. संबंधित साहित्य का विवरण एवं समीक्षा :–इस शोध से संबंधित साहित्य है जो पूर्व मे किए जा चुके है निम्नलिखित है–

शर्मा (1975)ने कन्या महाविद्यालय के छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर और व्यक्तित्व गुण, मूल्यों एवं बुद्धिलब्धि के अंतर संबंध का अध्ययन किया।

निष्कर्षः– 1. बुद्धिलब्धि और सामाजिक आर्थिक स्तर में धनात्मक और सह–संबंध पाया गया।

2. रूचि, पाठ्यसहगामी क्रियाओं में सहभागिता, शैक्षिक उपलब्धि एवं विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थितियों में अंतर संबंध पाया गया।

शुक्ला(2007)ने पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों के पारस्परिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन किया'' एवं निष्कर्ष पाया कि विद्यार्थियों की स्वचेतना का उनके व्यक्तित्व गुणों से गहरा संबंध पाया गया। छात्र–छात्राओं की स्वचेतना स्तर अधिक होने पर व्यक्तित्व गुण भी अच्छे होते है ।

मनोहर शैला (2008) ने ''विद्यालय के बाहर के वातावरण में किशोर आयु वर्ग की पत्र–पत्रिकाओं का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन'' पी.एच.डी. स्तर पर करते हुए पाया कि किशोर वर्ग पत्र–पत्रिकाओं की सुन्दरता, फैशन सबंधी विज्ञापन व साहसिकता भरी कहानियों से अधिक प्रभावी दिखाई दिया। इन पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन से किशोरों में ज्ञान निर्णय क्षमता एवं आत्मविश्वास तथा समझ का स्वरूप विकसित होता दिखाई दिया।

मार्क्श एस. हन्नला, हन्ना मैजाला और इर्की पैहकोनैन (2009) ने ''गणित में समझ और आत्मविश्वास का अध्ययन'' पर शोधपत्र प्रस्तुत किया जिसमें आत्मविश्वास एक ऐसा चर है जो भविष्य में विकास की भविष्यवाणी करने वाला महत्वपूर्ण चर है। एक बच्चे का आत्मविश्वास उसके भविष्य के विकास के बारे में भविष्य वाणी करता है साथ में उसकी उपलब्धि व सफलता के विकास का निर्धारण करता है। आत्मविश्वास और गणित के विकास के संबधं में एक महत्वपर्ण संबधं पहले भी शोधकर्ताओं द्वारा ढूढ़ा जा चुका है।

वर्मा वी.पी. 2010 ने''किशोरावस्था में आत्मविश्वास का पोषण'' विषय पर पी.एच.डी. स्तर पर कार्य किया। एवं निष्कर्ष पाया कि किशोरों में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए मुख्य कारक निम्न है– जिन बालकों को घर में प्यार का वातावरण मिलता है वे बालक आत्मविश्वासी होते है। तथा जिनके माता–पिता एक मार्गदर्शक के रूप में बालक का साथ देते है उनमें आत्मविश्वास का स्तर उच्च पाया जाता है।

डॉ. शिक्षा बनर्जी प्रकाशन वर्ष 2011 ने हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर उनके कलात्मक अभिरूचि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि बहिर्मुखी छात्राओं के कलात्मक आत्मविश्वास और कलात्मक अभिरूचि में धनात्मक संबंध पाया गया।

2. बहिर्मुखी छात्राओं के कलात्मक आत्मविश्वास में अति न्यून सह संबंध पाया गया।

3. शोध के उद्देश्य :–

1. छात्र–छात्राओं के अलग–अलग स्वचेतना का स्तर का अध्ययन करना।
2. छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत गुणों का स्तर का अध्ययन करना।
3. छात्रों की स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों का सह–संबंध ज्ञात करना।
4. छात्राओं की स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों का सह–संबंध ज्ञात करना।
5. छात्र–छात्राओं की स्वचेतना में पाये जाने वाले अंतर का अध्ययन करना।
6. छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत गुणों में पाये जाने वाले अंतर का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पना :–

1. छात्र एवं छात्राओं की स्वचेतना में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तिगत गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
3. छात्रों की स्वचेतना और उनके व्यक्तित्व गुणों में धनात्मक सह–संबंध पाया जायेगा।

4. छात्राओं की स्वचेतना और उनके व्यक्तित्व गुणों में धनात्मक सह–संबंध पाया जायेगा।
5. छात्र एवं छात्राओं के स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों के सह–संबंधों के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

6. **न्यादर्श** :–प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा रायपुर जिले के शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय के 200 विद्यार्थीयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। जिसमें 100 छात्रों के व्यक्तित्व गुण और स्वचेतना तथा 100 छात्राओं के व्यक्तित्व गुण और स्वचेतना इस प्रकार कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।

क्रमांक	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय	विद्यार्थियों की सख्या
1	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय जोरा	100
2	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय कचना	100
योग		200

7. **शोध विधि** :–इस समस्या की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है।

8. **उपकरण** :– प्रस्तुत समस्या पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों के पारस्परिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना है जिसमें निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है– स्वचेतना मापनी हेतु डॉ. आशा शुक्ला एवं किशोर व्यक्तित्व परीक्षण हेतु डॉ. ए. पाण्डेय द्वारा मिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

9. **सांख्यिकीय प्रयोगः**–प्रस्तुत शोध में प्रदतो के विश्लेषण कार्य निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान (Mean):– मध्यमान वह मूल्य होता है जो किसी उनकी संख्या से भाग देने पर प्राप्त हो–

1. मध्यमान

$$M = A.M. \frac{\Sigma fd}{N} XC.I$$

जहां :–

M = मध्यमान
A M = कल्पित मध्यमान
f = आवृत्ति
d = विचलन
N = आवृत्तियों की कुल संख्या
CI = वर्ग का अन्तराल

2. मानक विचलन (Standard Deviation)

$$S.D. = i\sqrt{\frac{(\Sigma fd^2)}{N} - (\frac{\Sigma fd}{N})^2}$$

जहां

S.D. = मानक विचलन
f = आवृत्ति
d = विचलन
N = आवृत्तियों की कुल संख्या
C.I. = वर्गान्तर का आकार
(Σfd2) = आवृत्ति विचलन का योग

i = वर्ग अन्तराल।

3. क्रांतिक अनुपात :–

$$CR = \frac{M_1 \sim M_2}{\sigma d}$$

जहां σक = $\sqrt{\frac{\sigma_1}{N_1} + \frac{\sigma_2}{N_2}}$

σd = दो प्रतिदर्शों का प्रमाणिक विचलन

σ1 = पहले प्रतिदर्शें का प्रमाणिक विचलन

σ2 = दूसरे प्रतिदर्श का प्रमाणिक विचलन विचलन

N1 N2 = प्रथम एवं द्वितीय समूह की इकाईयाँ

4. सह संबंध :–

$$r = \frac{\sum xy}{\sum x^2 \text{x} \sum y^2}$$

r = संहसंबंध गुणांक

$\sum xy$ = xऔर yविषयों के अलग–अलग विचलनों के गुणनफल का योग।

$\sum x^2$ = x विषय के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान के विचलन वर्गों का योग।

$\sum y^2$ = yविषय के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान के विचलन वर्गों का योग।

10. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्षः–

परिकल्पना –1

छात्र एवं छात्राओं की स्वचेतना में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 1

छात्र –छात्राओं के स्वचेतना के आधार पर मध्यमान प्रामाणिक विचलन के प्राप्तांक व क्रांतिक अनुपात

क्र.	समूह	छात्र/छात्रा संख्या (न्यादर्श)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (C.R)	σd	सार्थकता स्तर
1	छात्राएं	100	29.95	6.16	2.88	.8853	1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर
2	छात्र	100	27.4	6.35			

H1 - छात्र –छात्राओं के स्वचेतना के आधार पर मध्यमान प्रामाणिक विचलन का ग्राफीय प्रदर्शन।

Table 1 ,

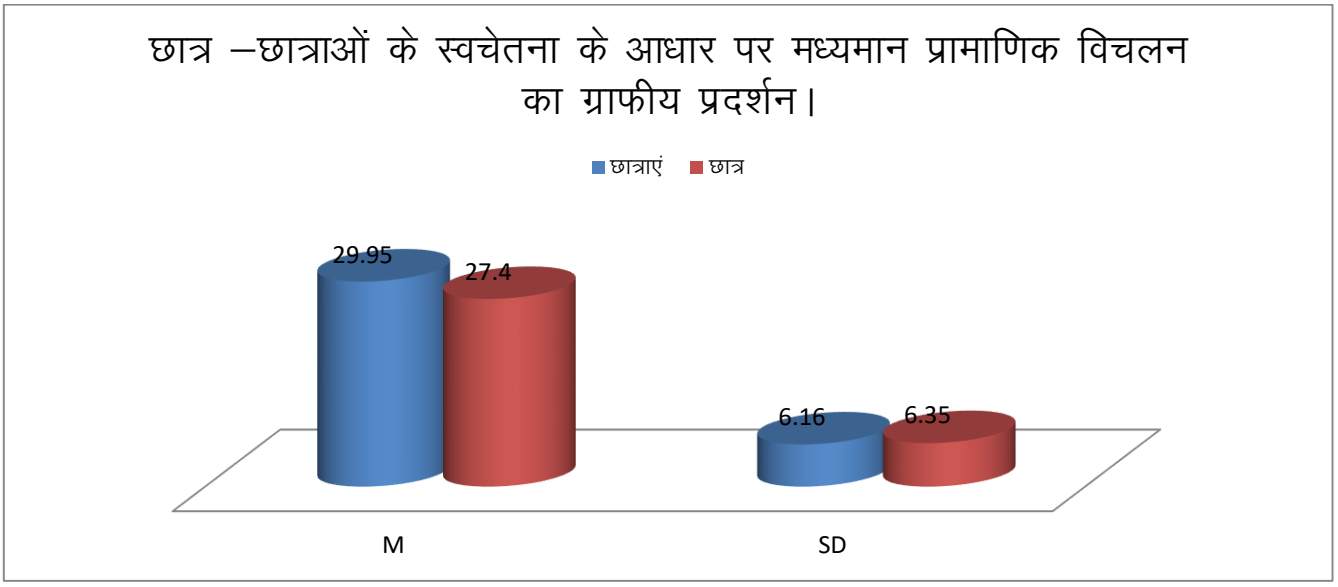

विवेचना एवं निष्कर्ष –उपर्युक्त सारणी 1 से स्पष्ट है होता है कि **df 198** स्वतंत्र अंष पर **t** तालिका के अनुसार क्रांतिक अनुपात का मान 5 प्रतिषत विष्वास स्तर पर 2.02 एवं 1 प्रतिषत विष्वास स्तर पर 2.64 है। प्रदत्तों के आकलन से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान अधिक है। अतः कह सकते है कि छात्र एवं छात्राओं की स्वचेतना में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–02 छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तिगत गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 2
व्यक्तित्व गुणों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व क्रांतिक अनुपात

क्र.	समूह	छात्र/छात्रा संख्या (न्यादर्श)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (C.R)	σd	सार्थकता स्तर
1	छात्राएं	100	101.4	16.1	2.11	**2.406**	1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर
2	छात्र	100	96.3	17.88			

परिणाम की व्याख्या एवं निष्कर्षः– उपर्युक्त सारणी 2 से स्पष्ट है होता है कि df 198 स्वतंत्र अंष पर **t** तालिका के अनुसार क्रांतिक अनुपात का मान 5 प्रतिषत विष्वास स्तर पर 2.02 एवं 1 प्रतिषत विष्वास स्तर पर 2.64 है। प्रदत्तों के आकलन से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.11 है चूंकि 1 प्रतिषत विष्वास स्तर पर सारणी के मान से गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान से अधिक है अतः कह सकते है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर है।
अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

H2 - व्यक्तित्व गुणों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन का ग्राफीय प्रदर्शन।

Table 2

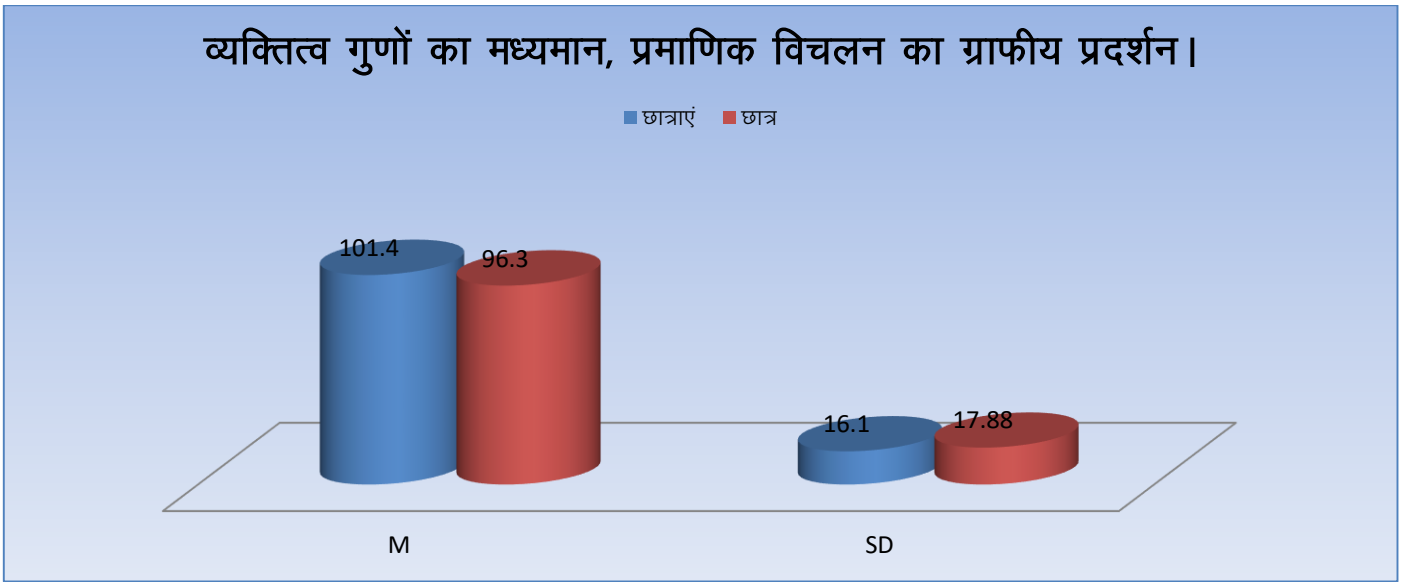

परिकल्पना क्रमांक–03 छात्रों की स्वचेतना और उनके व्यक्तित्व गुणों में धनात्मक सह–संबंध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 3

छात्रों की स्वचेतना और उनके व्यक्तित्व गुणों में धनात्मक सह–संबंध गुणांक

क्र.	समूह	छात्र / संख्या (न्यादर्श)	सह–संबंध गुणांक	निष्कर्ष
1	छात्र	100	.515	सामान्य धनात्मक सह–संबंध

परिणाम की व्याख्या एवं निष्कर्षः–उपयुक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि दोनों चरो के मध्य गणना द्वारा प्राप्त सह–संबंध गुणांक का मान .515 है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनो चरों के मध्य सामान्य सह–संबंध है। यह सह–संबंध धनात्मक तथ एक दिषीय है।

अतः उक्त परिकल्पना की पुष्टि की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–04 छात्राओं की स्वचेतना और उनके व्यक्तित्व गुणों में धनात्मक सह–संबंध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 4

छात्राओं की स्वचेतना और उनके व्यक्तित्व गुणों में सह–संबंध गुणांक

क्र.	समूह	छात्राएं / संख्या (न्यादर्श)	सह–संबंध गुणांक	निष्कर्ष
1	छात्राएं	100	0.0944	अति निम्न धनात्मक सह–संबंध

परिणाम की व्याख्या एवं निष्कर्षः–उपयुक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि दोनों चरो के मध्य गणना द्वारा प्राप्त सह–संबंध गुणांक का मान 0.0944 है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनो चरों के मध्य निम्न धनात्मक एक दिषीय सह–संबंध है।

अतः उक्त परिकल्पना की पुष्टि की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक–05 छात्र एवं छात्राओं के स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों के सह–संबंधों के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 5

छात्र एवं छात्राओं के स्वचेतना और व्यक्तित्व गुणों के सह–संबंधों के मध्य सार्थक अंतर

क्र.	समूह	सह–संबंध गुणांक	सार्थक अंतर	सार्थकता
1	छात्र	.515	3.245	1 प्रतिषत विष्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
2	छात्राएं	.09		

परिणाम की व्याख्या एवं निष्कर्षः– सारणी 5 के अनुसार 198 df पर t तालिका के अनुसार क्रांतिक अनुपात का मान 5 प्रतिषत विष्वास स्तर पर 2.02 तथा 1 प्रतिषत विष्वास स्तर पर 2.64 है। प्रदत्तों के आंकलन के अनुसार प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 3.245 प्राप्त हुआ है जो t तालिका के 1 प्रतिषत विष्वास स्तर पर 5 प्रतिषत विष्वास स्तर से अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों एवं स्वचेतना में सार्थक अंतर पाया जायेगा। पर परिकल्पना से पता चलता है कि सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

11. निष्कर्ष :– उपयुक्त निष्कर्षो के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि विद्यार्थियों की स्वचेतना का उनके व्यक्तित्व गुणों से गहरा संबंध है। विद्यार्थियों के स्वचेतना स्तर अधिक होने पर व्यक्तित्व गुण भी अच्छे होंगे। अर्थात स्वचेतना तथा व्यक्तित्व गुणों मे धनात्मक सह–संबंध पाया जाता है। विद्यार्थियों का पारिवारिक और सामाजिक, आर्थिक परिवेष उनके शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास में अहम भूमिका निभाता है।

12 . संदर्भ ग्रंथों की सूचीः–

1. Asakerh A. Yousofi N. (2018). *Reflective Thinking, self efficancy, self esteem and academic achievement of Iranian EFL student.* A research published in International journal of educational psychology ISSN-2014-3591 VOLUME 7, No 1 p68-89 Feb 2018.
2. Bekta, lknur, yardimci, Figun. (2018). "The effect of web-based education of the self confidence and anxiety levels of pediatric nursing interns in the clinical decision making process". *A research published in Journal of computer Assisted learning Dec 2018, Volume 34 Issue 6* , 899-906.
3. Geetha, S. (2018). (2018). Conducted a research work on "A survey of self confidence of B.Ed. students.". *Research abstract published in International journal of Education and Psychological Research Volume7, issue2, June 2018 ISSN:2349-0853,* , e2279-0179.
4. H. K. KAPIL. (2018). *Research Methods.* Rastrbhasa Upset Press.
5. शुक्ला आलोक (1997) अनुसूचित जाति, जनजाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की स्वचेतना एवं उनके व्यक्तित्व गुणों के पारस्परिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन।
6. इंटरनेट से प्राप्त गार्डनर थ्योरी।
7. भटनागर – शिक्षा मनोविज्ञान।
8. पाण्डेय, डॉ. श्रीधर – शिक्षा मनोविज्ञान एक परिचय।
9. डॉ. अंशुमंगल – शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ (राधा प्रकाशन आगरा)।

10. पाठक, पी.डी. – शिक्षा मनोविज्ञान।
11. पाण्डेय, के.पी. – नवीन शिक्षा मनोविज्ञान।
12. सिंह, अरूण कुमार – आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान।